गुल्लक में सिक्के

जब पिताजी युद्ध के लिए गए, तो मैं बहुत रोया. उन्होंने मुझे गले लगाया और मुझ से बहादुर बनने को कहा. लेकिन मुझे बहुत सी चीजों से डर लगता था ...

हर दिन एक युवा लड़का अपने सामने के बरामदे में घंटों बैठे बड़े, डरावने दिखने वाली घोड़ागाड़ियों को सड़क पर जाते देख रहा था. वे युद्ध के प्रयास के लिए चीज़ें इकट्ठी कर रहे थे. अपने डर के कारण, लड़का अपने फौजी पिता की तरह ही बहादुर बनना चाहता है. वो बहुत साहस जुटाने की कोशिश करता था लेकिन फिर भी वो सड़क के घोड़ों के पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाता था.

अंत में, पिता को विदेश भेजने के लिए उसे उनके जन्मदिन के लिए एक ठीक उपहार सूझा. उससे लड़के को अपने डर को दूर करने का मौका मिला और फिर उसने एक निडर युवा बनने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया, जिससे पिता को उस पर गर्व हो.

द्वितीय विश्व युद्ध की दिल दहला देने वाली यह कहानी युवा और बूढ़े पाठकों का दिल छू लेगी.

गुल्लक में सिक्के

जिस दिन पिताजी युद्ध के लिए गए, मैं रोया. उन्होंने मुझे गले लगाया और मुझ से बहादुर बनने को कहा.

लेकिन मैं बहुत सी चीजों से डरता था.

पिताजी के बिना, अब माँ और मुझे ही मिलकर सब चीजों का ख्याल रखना पड़ेगा.

हमारे पड़ोस में हवाई हमले के सायरन का परीक्षण होता था जिससे बहुत जोर का शोर होता था.

पापा भी लड़ाई के मैदान में बम और बंदूकों की आवाज़ें सुनते होंगे.

मुझे रोजमर्रा की चीजों से भी डर लगता था.

खासकर सड़क के घोड़ों से.

मैं और पिताजी सामने वाले बरामदे की सीढ़ियों पर में बैठते थे. अब मैं वहां खुद अकेला बैठा था और अपने हरे कांच के गुल्लक के सिक्के गिन रहा था. पिताजी का जन्मदिन आ रहा था. मैं उनके लिए जन्मदिन का उपहार खरीदने के लिए पैसे जमा कर रहा था. मैं पिताजी को कुछ विषेश उपहार देना चाहता था. माँ पिताजी के लिए गर्म मोज़े बुन रही थीं. माँ ने कहा कि वो को मेरे उपहार को मोजों के साथ पिताजी के पास विदेश में पार्सल द्वारा भेजेंगी.

तभी मैंने बाहर सड़क पर कबाड़ी की आवाज़ सुनी.

मैं तेज़ी से घर में घुसा और मैंने पेंट्री से पुराने अखबारों का बंडल उठाया. फिर मैंने जाली वाला दरवाज़ा खोला और अखबारों को बाहर सड़क के किनारे फेंक दिया.

जोसेफिना नाम का घोड़ा हमारी सड़क पर एक गाड़ी को खींच रहा था. कबाड़ी, लकड़ी की सीट पर ऊँचाई पर बैठा था.

"कबाड़!" क्लॉप-क्लॉप-क्लॉप. "पुराने अखबार! भंगार!" क्लॉप-क्लॉप-क्लॉप.

"अच्छा!" कबाड़ी ने रद्दी अखबार के मेरे बंडल को देख कर कहा. उसने फुटपाथ पर एक भारी लोहे का वज़न गिराया - धम्म - जिससे जोसफिना आगे न चले. ऐसा लग रहा था कि जैसे वो लंगर था और घोड़ागाड़ी एक जहाज थी.

घोड़े की तेज़ गंध से मेरी नाक और मुंह भर गया. जोसेफिना ने अपना सिर इधर-उधर घुमाया और मुझे सीधा देखा. उसके दाँत पियानो की कुंजियों जितने बड़े थे.

मैं कूदकर दूर हो गया. क्या जोसफिना ने कभी किसी को काटा था?

मेरे पिताजी जब बच्चे थे तो एक बार घोड़े ने उन्हें काटा था. उनके कंधे पर अभी भी उसका चाँद के आकार का निशान था. "घोड़े भी लोगों की तरह ही होते हैं बेटा," उन्होंने कहा. "कभी-कभी कोई खराब होता है, लेकिन ज्यादातर अच्छे होते हैं."

कबाड़ी ने मेरे अखबार के बंडल को गाड़ी में पीछे फेंक दिया.

उसने कहा, "युद्ध के प्रयासों में हर कोई मदद कर रहा है. क्या तुम्हारे पास कुछ स्क्रैप लोहा है? लोहे से पानी के जहाज और हवाई जहाज बन सकते हैं."

मैंने अपने पिछले दरवाजे के ऊपर गढ़ी लोहे के घोड़े की नाल के बारे में सोचा. पिताजी ने उसे "U" की तरह दिखने के लिए वहाँ ठोका था.

"इस तरह "U" अच्छे भाग्य को पकड़ेगा और उसे पकड़ कर रखेगा," पिताजी ने कहा. "यदि हम उसे उल्टा लटकाते, तो सारा अच्छा भाग्य नीचे गिर जाता."

एक भाग्यशाली घोड़े की नाल को बेचना एक अच्छा विचार नहीं था. मैं पिताजी के युद्ध से घर वापिस आने तक, बिल्कुल भी बुरा भाग्य नहीं चाहता था.

"केवल पुराने अखबार हैं," मैंने कबाड़ी से कहा और उसके घोड़े पर नजर रखी. फिर उसने एक चाबुक मारा और गाड़ी आगे बढ़ाई.

"क्या तुम घोड़े को एक गाजर खिलाना चाहते हो?" कबाड़ी ने पूछा.

मैंने एक कदम पीछे हटकर और मैंने अपना सिर हिलाया.

"आज नहीं," मैंने कहा.

कबाड़ी ने बस इतना कहा. "ठीक है, शायद अगली बार."

मैं बरामदे में वापस गया और अपने सिक्के दुबारा गिने. उन्हें मैंने फिर से अपने हरे कांच के गुल्लक में वापस रख दिया.

कुल मिलकर कितने सिक्के - छप्पन!

मंगलवार और शुक्रवार दूध के दिन थे. मिस्टर लेसी हमारे दूधवाले थे. उनके घोड़े का नाम नेल था.

"गुड मॉर्निंग," मिस्टर लेसी ने कहा और फिर नेल हमारे घर के सामने रुका.

मैंने मिस्टर लेसी को हमारे बरामदे में दूध की तीन बोतलें रखते हुए देखा. उन्होंने हमारी तीन खाली बोतलें अपनी तार की टोकरी में डाल दीं.

"क्या मैं उसे उठाने में आपकी मदद कर सकता हूं, मिस्टर लेसी?" मैंने पूछा .

बोतलें और टोकरी मेरे पैर के टकराई और उसमें से चिनक! चिनक! की आवाज़ आई.

जब नेल ने मिस्टर लेसी को देखा, तो वह चुप हो गई और उसने अपना सिर नीचे किया. फिर उसने अपने पैर पटके.
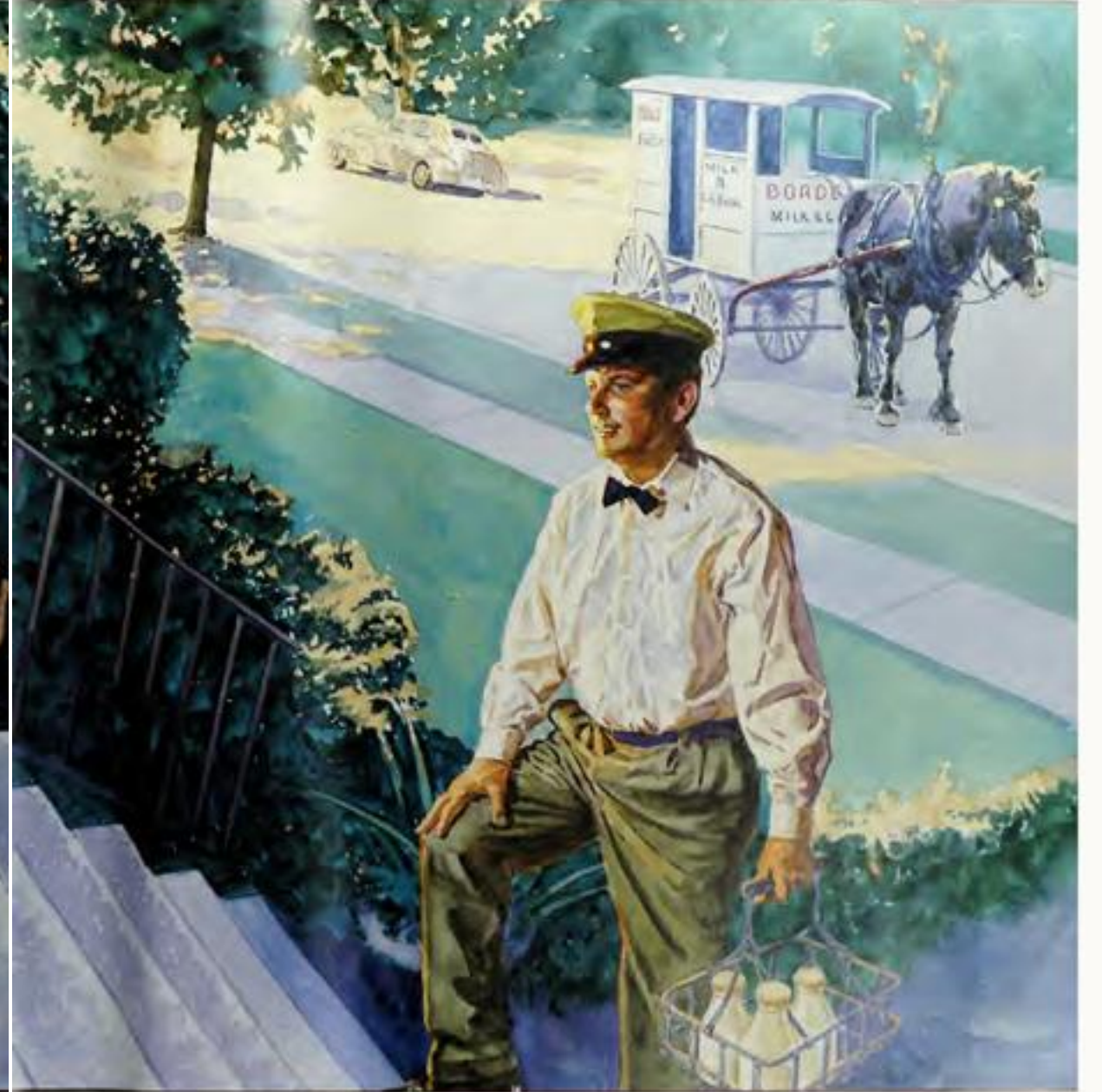
मैंने फुटपाथ के किनारे तेजी से गया.

"मेरे पिताजी घोड़ों से नहीं डरते हैं," मैंने कहा. "क्योंकि वो एक फार्म पर बड़े हुए थे."

मिस्टर लेसी ने मेरी तरफ मजाकिया अंदाज में देखा. फिर उसने सिर हिलाया और मदद के लिए मुझे एक सिक्का दिया. नेल पहले से ही अगले घर तक जा चुका था.

पिताजी ने कहा कि घोड़े से काटे जाने के बाद फिर वो कभी किसी घोड़े के पास नहीं जाना चाहते थे. लेकिन दादाजी को काम में पिताजी की मदद चाहिए थी.

"अगर कोई ज़रूरी काम है तो वो तुम्हें वो करना ही होगा," पिताजी ने मुझ से कहा था. "चाहें तुम्हें डर लगे, फिर भी."

हफ्ते में तीन बार, कचरे की गाड़ी आती थी. उसे बिली और बेली दो बड़े घोड़े खींचते थे. उनके पैर बड़े और भारी थे - लोहे की बाल्टियों जैसे.

"रुको!" अल्बर्ट रस्सी संभालते हुए चिल्लाया. दो लोगों ने कचरा इकट्ठा करने के लिए अपने कंधों पर कैनवास की टोकरियाँ रखीं थीं. उन्होंने उनमें कचरा भरा और उसे खुली गाड़ी में फेंक दिया.

"अगर पिताजी यहाँ होते, तो वे उन घोड़ों की टीम को अच्छी तरह चला सकते थे," मैंने अल्बर्ट से कहा. "वो दादाजी की घास गाड़ी को चलाते थे. मैं एक बार उसके पीछे सवार हुआ था."

"क्या तुम इस गाड़ी के पीछे सवारी करना चाहोगे?" अल्बर्ट ने चुटकी लेते हुए पूछा.

मैंने अपनी नाक पकड़ी और अपना सर हिलाकर मना किया. गर्मी वाले दिन, कचरे की गाड़ी में से भयानक बदबू आ रही थी.

"जी नहीं, धन्यवाद."

फिर अल्बर्ट हँसा.

बिली और बेली ने अचानक खुद को हिलाया. उनके गले में लटके घुंघरू बजे. फिर मैं बरामदे में वापस चला गया. कचरा गाड़ी के जाने की मुझे खुशी हुई .

उस दोपहर मैं बरामदे की सीढ़ी पर एक पत्र लिखने के लिए बैठा. "पिताजी, मेरी इच्छा है कि आप घर वापिस आएं," मैंने लिखना शुरू किया. "अगर आप यहाँ होते..."

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और उन सैकड़ों बातों के बारे में सोचने लगा जो मैं पिताजी को बताना चाहता था. लेकिन मुझे नहीं पता था कि मैं उन्हें कैसे लिखूं.

फिर एक घोड़े की आवाज़ से मेरी आँख खुली. घर के ठीक सामने फुटपाथ पर एक आदमी एक छोटे घोड़े (टट्टू) के साथ खड़ा था. टट्टू की पीठ पर एक काठी बंधी थी. घोड़े के बाल और पूंछ धूप में झिलमिला रही थी.

"सुनो, बेटा," उस आदमी ने कहा. "आप तुम इस टट्टू की सवारी करना चाहोगे?"

"क्या?" मैंने पूछा.

उस आदमी के गले में एक बड़ा कैमरा लटका था. "मैं टट्टू पर बैठे हुए तुम्हारी एक तस्वीर खींचूंगा," उसने कहा. "केवल पचास सेंट में."

मैं उस आदमी को यह नहीं बताना चाहता था मुझे घोड़ों से डर लगता था.

"तुम्हारे टट्टू का नाम क्या है?" मैंने पूछा.

"उसका नाम फ्रीडम है."

"फ्रीडम," मैं फुसफुसाया. पिताजी आजादी की लड़ाई लड़ने गए हैं. पिताजी को वो नाम ज़रूर अच्छा लगेगा.

"अगर मेरे पिताजी यहाँ होते ..." मैंने कहना शुरू किया. लेकिन मेरे पिताजी यहाँ नहीं थे.

मैंने अपना सिर हिलाया. "नहीं धन्यवाद, मिस्टर."

मैंने उस आदमी को टट्टू के साथ दूर जाते देखा. एक उदासी मेरे अंदर भर गई. अगर पिताजी मुझे अभी देखते तो फिर वो क्या सोचते?

और फिर मुझे याद आया कि उन्होंने मुझसे क्या कहा था. यदि कुछ महत्वपूर्ण काम हो, तो तुम्हें उसे करना ही होगा.

मैं अपने बचाए हुए पैसों से पिताजी के जन्मदिन के लिए कुछ विशेष खरीदना चाहता था. और मुझे पता था कि वो वाकई में महत्वपूर्ण था.

"अरे मिस्टर!" मैं चिल्लाया. "अरे, मिस्टर, वापस आओ!"

मैं उसके पीछे-पीछे फुटपाथ पर भागा, मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा. "मैं फ्रीडम के साथ अपनी एक तस्वीर खिंचवाना चाहता हूं!"

फोटोग्राफर रुका और उसने अपना कैनवास बैग खोला. अंदर से उसने नरम चमड़े की बनियान निकाली जिसमें झालर लटकी थी. उसने वो बनियान मुझे पहनाई. मैंने अपने कंधों और पीठ पर उसका वजन महसूस किया. फिर उसने मेरे सिर पर असली काऊबॉय की टोपी पहनाई. वो भी असली लग रही थी.

मेरे घुटने कांपने लगे. लेकिन मैंने बहादुर बनने की पूरी कोशिश की.

उस आदमी ने काठी पर चढ़ने में मेरी मदद की. वो फिसलनदार और चिकनी थी. मैंने काठी से स्लाइड करना शुरू कर दिया और मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा. मैं घोड़े से गिरने वाला था!

"अपने घुटनों से पकड़ो, बेटा," फोटोग्राफर ने कहा. फिर मैंने अपने घुटनों से कसकर पकड़ा. फिर फ्रीडम मेरे घर की ओर ले जाने लगा. मैं काठी में आगे-पीछे झूल रहा था, लेकिन अब मैं फिसल नहीं रहा था.

मैं सचमुच घोड़े की सवारी कर रहा था! वो एक छोटा सा घोड़ा था, लेकिन मेरे लिए वो बहुत मायने रखता था.

जैसे ही मैं और फ्रीडम घर के बरामदे के पास पहुंचे वैसे ही मेरी माँ घर से बाहर आईं.

"माँ, देखो! मैं घोड़े की सवारी कर रहा हूँ!" मैं चिल्लाया. फिर मैं ज़ोर से हँस दिया.

"लगता है कि तुमसे मुस्कुराने के लिए कहने की मुझे ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी," आदमी ने कैमरे के पीछे से कहा.

“क्लिक करें!”

फ़ोटोग्राफ़र ने मुझे फ़्रीडम की पीठ से नीचे उतरने में मदद की. मैंने टट्टू को अलविदा कहने के लिए उसे अच्छी तरह से सहलाया. फिर मैं अपने हरे कांच के गुल्लक में से पचास सिक्के गिनने को दौड़ा.

"तुम्हें यह तस्वीर बहुत पसंद आएगी!" आदमी ने मुझ से कहा.

समाप्त